सबके साथ सबका विकास

दुनिया में ~~अगर~~ एक देश को उन्नति तक पहुँचने के लिए उस देश का पूरी तरह विकसित होना बहुत ज़रूरी है। भारत एक ऐसा देश है जो विकसित होने जा रहे हैं। हमारे सरकार देश के विकसन के लिए कई तरह के योजनाओं का आयोजन कर रहे हैं। और साथ ही साथ वो इन योजनाओं को साकार करने के लिए कठिन मेहनत भी कर रहे हैं।

एक देश को विकसित करना सिर्फ उस देश के सरकार का काम नहीं है। यानि कि भारत को विकास तक लेजाने के लिए पूरे भारत वासियों जो है भारत माता के पुत्र और पुत्रियाँ उन सबके कठिन ~~मेहनत~~ का आवश्यकता है। पहले देश के जनता के बीच एकता होना चाहिए। फिर सब एक साथ अपने देश को विकसित करने के काम में लग जाना चाहिए।

भारत ~~के~~ विकसित करने का कई तरह के आयोजन हो रहे हैं। और उसके हिसाब से यहाँ कई तरह के बदलाव भी हो रहे हैं, लेकिन वो सब पूरे तरह से साकार होना है तो पहले भारतवासियों में ये सोच आना बहुत ज़रूरी है कि, अगर हमें हमारे देश के उन्नति चाहिए तो ~~दूसरों के तरह~~ ~~अंग्रेज़ों~~ सारे भारत-वासि

भूलकर सारे लड़ाइयों को छोड़कर एक साथ चलना पड़ेगा।

भारत विकासित होने में सफल होते आ रहे हैं। लेकिन उसके लिए हमें कई सारे रुकावटों का भी सामना करना पड़ रहे हैं। गरीबी, बेरुज़गारियों का बढ़ना, स्त्री-पुरुष विवेचन, निरक्षरता (अशिक्षित लोग) जैसे भारत के सामने समस्याएं कई सारे हैं। लेकिन इन सबके पहले जिस प्रश्न का उत्तर हमें ढूँढने है वो है भारत के जनता एक दूसरे के साथ दिखानेवाले भाव-भेद।

लोग एक दूसरे के ओर कई तरह के भाव-भेद रखता है। जिनमें सबसे पहले आते हैं जातिभेद। लोग धर्म और जाति के नाम पर एक दूसरे से लड़ते आ रहे हैं। हर धर्म का अपने-अपने महत्व होते हैं। हमें उन सबके आदर करने चाहिए। अपने धर्म या जाति सबसे अच्छा है ये कहकर लोग जो एकदूसरे से लड़ते हैं, वो उनके बीच के एकता को नाश करते हैं। और लोग सिर्फ अपने लोगों और अपने विकास के लिए काम करते हैं। देश को तो सब लोग भूल ही जाते हैं।

लोगों एक दूसरे के बीच दिखानेवाले विवेचन के वजह से होनेवाले असमता ही है हमारे विकसन के सामने आनेवाले सबसे बड़े

[stamp]

रुकावट। लोग स्त्री और पुरुष को कभी भी एक नज़र से देखते ही नहीं। विकास में महिलाओं का बहुत बड़ा हाथ है। लेकिन ये तो कोई समझता ही नहीं। लड़कियाँ पैदा करने से ही सब लोग डरते हैं। एक देश को तभी विकसित माना जाएगा जब वहाँ का स्त्री-पुरुष अनुपात एक जैसा होगा। लड़कियाँ पैदा करना कोई पाप नहीं है। वो पूरे परिवार को एक साथ लेकर चलाते हैं। घर में सुख शांति बनाए रखते हैं। विवेचन इतनी ज्यादा बढ़ गयी है कि अब एक ही काम के लिए दोनों को स्त्री और पुरुष को अलग अलग वेतन देते हैं। समाज में एकता चाहिए या समाज को एक साथ चलना होने स्त्री और पुरुष को समान महत्व देना होगा।

एक देश की विकसित होने के लिए देश के सारे जनता को अच्छे काम और अच्छे जीवन की ज़रूरत है। लेकिन इसके लिए शिक्षा की ज़रूरत बहुत ज़्यादा है। लेकिन ज़्यादातर गरीब लोगों को शिक्षा पाने के अवसर बहुत कम ही मिलते हैं। उन्हें अपने रोज़ी रोटी के लिए दिन भर काम करना पड़ते हैं। घर चलाने के लिए छोटे बच्चों भी काम में लग जाते हैं। इसके वजह से नहीं उन्हें शिक्षा पाने की अवसर मिलती है। और नहीं क्या ही एक अच्छा काम पाने के अवसर। गरीब और संपन्न लोगों के बीच का जो विभाजन

है वो बढ़ती आ रहे हैं। अगर एक देश का विकास होना होने उस देश के सारे लोगों को एक साथ चलना पड़ेगा। लेकिन जो विवेचन सामने खुद एक दूसरे के बीच में बढ़ाते है वो उनको एक साथ चलने नहीं देते हैं। अपने देश को अगर विकास बनाना है तो पूरे देशवासियों को एकजुटे के साथ एक साथ चलना होगा। तभी विकास हो पायेगा। लेकिन इन विवेचन उन्हें चलने ही नहीं देते हैं।

मेरे विवेचनों में से सबसे पहले जो आते हैं वो है भ्रष्टाचार। हर लोग को न्याय देना भारत के संविधान में है। लेकिन इन भ्रष्टाचारियों अलग नजर से लोगों को देखती है। वो सही काम करने के जिम्मेदार होने के बाद भी गलत के साथ देते हैं। उनके साथ देते है जो बहुत पैसे वाले हो याफिर उनके कोई अपने हो। जब जिम्मेदार लोग ही समाज को अलग अलग नजर से देख रहे हो तो यही कह सकते है कि समाज को एक साथ चलने में यही लोग रोक रहे हैं।

स्त्री-पुरुष विवेचन, गरीब और संपन्न लोगों के बीच का ~~का~~ विवेचन, भ्रष्टाचार द्वारा होने वाले विवेचन, शिक्षित और अशिक्षित लोगों के बीच होनेवाले विवेचन ये सब कुछ समाज के

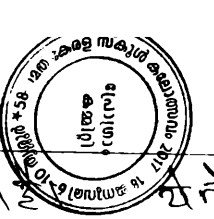

बीच का समता की बात करते हैं तो सब लोग जानते हैं कि अगर एक देश का विकास होना है तो पहले वहाँ जनता के सबके साथ होने का अहसास है होना चाहिए। लेकिन जो विवेचन आज हो रहे हैं वो कैसे सब को साथ रहने देगा? विकास चाहिए तो सबको एक साथ सारे विवेचन भूल कर आगे बढ़ना होगा।

सिर्फ देश के विकास के लिए ही नहीं समाज का और लोगों के जीवन में भी विकास चाहिए तो सबको साथ रहने का अहसास होना बहुत ज़रूरी है। अगर समाज में किसी प्रश्न होना है तो सब को एक साथ ही उसके खिलाफ आवाज़ उठाना होगा।

आज महिलाओं के और लैंगिक शोषण बढ़ते आरहे हैं। लेकिन वो खुलकर बोलने के लिए सब लोग डरते है। सब यही सोचते है कि अगर समाज ये जान गया तो उनका भविष्य का क्या होगा। हमें यही सोच समाज के मन में आने ही नहीं देने चाहिए। जो भी औरत पर हाथ उठाएगा या फिर उनपर कोई शोषण करने की कोशिश करेगा हमें एक साथ उनके खिलाफ आवाज़ उठाना होगा और उन्हें कठिन शिक्षा दिलाने की कोशिश करना होगा। अगर ऐसा नहीं किया तो उनके देश के और भी लड़कियाँ

को इसका शिकार बनना पड़ेगा। अगर समाज में लड़कियों की उन्नति या उनके विकास चाहिए तो हमें एक साथ चलना होगा एक साथ काम करना होगा ऐसा काम करना होगा कि किसी को भी ऐसा फिर से करने का हिम्मत ही न आए। और सारे लोगों को ये विश्वास दिलाना होगा कि सब है उनके साथ।

साथ मिलकर विकास के लिए हमें किसी और चीज के लिए लड़ना होगा तो फिर वो बाल श्रम के खिलाफ होगा। न जाने देश के कितने सारे बच्चे इसके वजह से अपने मीठा बचपन खो दिया है और भविष्य के सपने देखना ही छोड़ दिया है। हम सब को उसके खिलाफ आवाज तो ज़रूर उठाना चाहिए।

हमारे समाज के विकास के ओर चलने से रोकने वाले कई सारे समस्याओं है। और उनके खिलाफ कई लोग काम भी कर रहे है। इन सारे प्रश्नों का एक उपाय निकाला तो ही हमारे देश को विकसित कहा जा सकते है। एक अकेले आवाज को अनदेखा करना बहुत आसान है। लेकिन अगर पूरे समाज एक साथ एक दूसरे का बीच का सारे भेद-भाव भूलकर अगर हुआ सबके खिलाफ एक साथ चलेगा तो ज़रूर कुछ अच्छा

फल हमें मिलेगा। यानि कि सब लोग एक साथ एक दूसरे के साथ लेकर चलेंगे तो हमें एक ऐसा समाज को बना सकता है जहाँ सब खुश हो और सबको अच्छा ज़िन्दगी मिलें।

बेरोज़गारी और गरीबी हमारे देश सामना करनेवाले सबसे बड़ा समस्याओं में से आते हैं। बेरोजगार और गरीबियों का बढ़ना एक देश का विकसन और लोगों के जीवन के विकास में भी गलत असर डाल सकते हैं। अगर हम कुछ लघु व्यवसाय और कुटिल व्यवसाय की छो-छो चीज़ें खरीदना शुरू करेंगे तो इससे हम ये दोनों समस्याओं का हल निकाल सकते हैं उससे कई सारे लोगों को काम भी मिलेगा और गरीबी भी कम होगा।

भुखमरी, पोषण के कमी से मरने वाले लोग भी हमारे विकास को रोक रहा है। अगर हम राशन के दुकान का सही तरह का उपयोग करेगा तो इसका भी हल होगा।

सबको विकास के ज़रूरत है। सबका विकास मतलब एक देशका ही विकास कहा जा सकते हैं। विकास सिर्फ हमारे देश का ही नहीं हमारे सोच को भी आने के ज़रूरत है। अगर हम इन सारे समस्याओं को हमारे

देश से दूर करेंगे तो हम हमारे देश को ज़रूर विकासित कहा जा सकता है। लेकिन एक देश को विकासित करना सिर्फ एक व्यक्ति का ज़िम्मेदारी नहीं है उसके ज़िम्मेदारी सबको है। सबको एक साथ उन सारे समस्याओं के खिलाफ आवाज़ उठाने पड़ेगा जो हमारे समाज के विकास को रोकने केलिए आरे सामने हैं। स्त्री-पुरुष विवेचन के खिलाफ सब को एक साथ काम करना होगा। उसके लिए सिर्फ आप लोगों के नज़रियाँ बदलने के ज़रूरत है। अगर हम सब लोग दोनों को समान नज़र से देखेंगे तो इसको हम दूर कर सकते हैं।

जातिवाद खुद लोग बनाया हुआ समस्या है। लोग अगर खुदके जाति या धर्मपर विश्वास करके दूसरे के इज़्ज़त करेंगे तो इसको भी दूर कर सकते हैं।

अगर हम सरकार के सारे सेवन गरीब लोगों तक पहुँचने के लिए एक साथ काम करेंगे उसे भी रोक सकते हैं। लेकिन शोषण करनेवालों के खिलाफ अगर एक साथ हम चलेंगे तो वो हमारे विकास के लिए एक अच्छा असर ही डालेगा। बालश्रम भी रोकने केलिए हमें उन लोगों को समझाना होगा जो बच्चों से इन सारे काम करने के लिए

रहे कर रहा हो। ऐसे कई सारे कारण है जिनसे हम उन सारे समस्याओं का हल निकाल सकते है जो समाज के विकास और लोगों के बीच का साथ चलने कोशिश रोक रहे हो। विकास चाहिए तो हमें इन सब के खिलाफ साथ चलना होगा। अगर हम एक दूसरे का साथ देगा तो ही सब का विकास हो सकता हैं।

विकास करना पूरे जनता की ज़िम्मेदारी है। उसके लिए सब को साथ रहना होगा और उसके लिए मेहनत करना होगा। अगर हम एक-एक करके अलग समस्याओं के लिए लड़ेंगे तो उससे किसी का भी विकास नहीं हो सकते हैं। हमें ये हमेशा ये याद रखना होगा कि अगर हम ये सारे विवेचनाओं को भूलकर एक साथ सा इन सारे विवेचनाओं को दूर करने के बारे में सोचेंगे तभी सबका विकास होगा। यानिकि एक साथ चलने को रोकनेवाले एक दूसरे के बीच का एकता को तोड़नेवाले उन सारे भाव-भेदों को भूल जाओ और विकास को रोकने वाले चीज़ों के खिलाफ एक साथ चलेंगे तो ही हम सबका विकास हासिल कर सकते हैं।

सिर्फ मानव के ही नहीं विकास

प्रकृति प्राप्त करने के लिए हमें हमारे प्रकृति का भी रक्षा करना जरूरी है। उनका भी साथ चलना चाहिए। वो ही हमारे जीवन का नींव है।

एक दूसरे के साथ लेकर चलोगे तो ही हम सारे क्षेत्र में विकास प्राप्त कर सकोगे। साथ हमें सबको शिक्षा दिलाने के लिए भी मेहनत करना होगा। क्योंकि सबको शिक्षा मिला तो ही विकास होगा। और शिक्षा ही है विकास के नींव। जैसे सब लोग शिक्षित होगा तो ही सबको अच्छी काम मिलेगी। अच्छे काम मिला तो ही वो लोग पैसे कमा सकते है और अच्छे जीवन को प्राप्त कर सकते है। इसके लिए हमें कठिन मेहनत करना होगा। सबका जीवन साथ अच्छा होगा तो ही हमारे ~~समाज का~~ सबका विकास हो सकते है। सबके साथ चलने से ही हम सब सारे समस्याओं को दूर करके सबका सबको एक अच्छे जीवन दिला सकते है। क्योंकि एकता से हम कुछ भी हासिल कर सकते हैं। एकता ही सबका नींव है। तो सबका सबका विकास अगर चाहिए हो तो हमें उस एकता के साथ ही आगे बढ़ना चाहिए ताकि कि सबके साथ सबका विकास।

एकता ही सबका नींव है। अगर हम एकता-

के साथ कुछ भी करेंगे तो हम सब हासिल कर सकते हैं। जैसे कई सालों पहले हमारे नेताओं ने एक साथ हुए देश के साथ मिलकर 1947 को हमारे देश की आज़ादी प्राप्त की थी। विकास को रोकनेवाले वो सारे समस्या कुछ भी नहीं होगा, अगर हम सब साथ चलेंगे तो।

एक इनसान के जीवन अच्छा होने से सबका विकास नहीं ही हो सकते हैं। सबका जीवन अच्छा होगा तो ही देश का विकास हो सकते है। सबके साथ ही है सबका विकास। मतलब अगर सबके जीवन अच्छा होने उसमें पूरा देश की विकास होता है। सबके समस्याओं का हल अगर हम साथ चलें तो निकाल सकता है इससे सबका जीवन अच्छा हो सकते है, और उसी में ही है सबका विकास।